नेपालक नोर मरूभूमिमे

नेपालक नोर मरूभूमिमे

विन्देश्वर ठाकुर

श्रुति प्रकाशन

दिल्ली

Ist edition 2014 of Bindeshwar Thakur's Nepalak Nor Marubhumi Me- Seed Story- Ghazal- Sher-o-Shairi- Poems in single binding-published by Shruti Publication, 8/21, Ground Floor, New Rajendra Nagar, New Delhi -110008

ISBN:978-93-80538-99-0
Price: Rs. 200/- (INR)-

श्रुति प्रकाशन

रजिस्टर्ड ऑफिस: ८/२१, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-११०००८.
Website:http://www.shruti-publication.com
e-mail: shruti.publication@shruti-publication.com

Designed by: Prity Thakur

Printed & Typeset at: Ajay Arts, Delhi-110002

Sole Distributor :
Pallavi Distributors, Supaul,Ph.+918539043668

समर्पण

बेरोजगारीके चपेटामे पड़ि प्रवासी जीवन बिताबऽपर बाध्य भेल ओ श्रमिक सभ जे अपन इच्छा, सपना आ यौवनाकेँ तिलाञ्जली दैत, आफन्तसँ लाखो कोस दूर केवल अपन परिवार आ राष्ट्र लेल दिन-राति संघर्ष कऽ रहल छथि। ओइ सच्चा, निठुर आ ईमानदार श्रमजीवी सभकेँ ई पोथी समर्पित करै छी।

आमुख

साहित्य प्रति अगाध रुचि भेलाक कारण रचना लिखब-पढ़ब हमर शौख अछि। विद्यार्थीये जीवनसँ किछु छिट-फुट रचना लिखितो प्रवासमे आबि आर बेसी विकसित भेल । कतारक मरुभूमिमे अपन देश आ परिवारसँ दूर रहल वेदनासँ मन बेपीड़ित भेलाक कारण हमरा लेल साहित्य एक नव गति लेलक आ कथा, कविता, गीत गजलक माध्यमसँ अपन भोगल भोगाइ आ अपनत्वकेँ सम्झनासभ बाहर लेबाक मौका भेटल। ऐ रेगिस्तानमे अन्तर्राष्ट्रिय नेपाली साहित्य समाज कतार च्यापटर आ नबोदित साहित्यिक मोबाइल पुस्तकालय नामक दू टा संस्था एवम् एकर पदाधिकारी लोकनि भरपूर सहयोग केलनि। संगे-संग मैथिलीक सर्जक सभमे अब्दुल रजाक जी, बेचन महतो आ मो. असरफ राइन जीक सेहो स्नेह भेटल। हिनका सब गोटे प्रति हार्दिक आभार प्रकट करऽ चाहब। एम्हर हमरासँ दूर रहितो केवल फेसबुक आ ईमेलक माध्यमसँ सदैव मार्गदर्शन कऽ रहल विदेह ग्रुप प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करै छी। ऐके साथ छिरियाएल रचना सभकेँ एकत्रित कऽ एकटा समग्र पोथीक रुप देनिहार हमर परम् पूज्य, मैथिलीक पैघ स्त्रष्टा एवम् विदेह ग्रुपक संयोजक श्री गजेन्द्र ठाकुर जी प्रति सादर नमन करै छी। साथे धन्यवादक पात्र छथि विदेह ग्रुप आ ऐ समूहक पदाधिकारी लोकनि। हमर रचना सभकेँ गहनपूर्वक अध्ययन कऽ सदैव सल्लाह-सुझाब देनिहार विदेह ग्रुपक श्री गजेन्द्र ठाकुर जी, आशीष अनचिन्हार सर,

उमेश मण्डल जी, पंकज चौधरी, अमित भाइजी, शान्तिलक्ष्मी दीदी, राजीव रंजन सर आदि-इत्यादिकेँ बहुत-बहुत धन्यवाद।

हमर जीवनमे प्रेरणाक स्त्रोत बनल दादी श्रीमती देबसुनर देवी, पूज्य पिता श्री सूर्यनारायण ठाकुर, माता तुलफी देवीकेँ श्रीचरणमे बारम्बार प्रणाम! तथा गुरु श्री पवन कुमार मण्डलकेँ सत्-सत् नमन करै छी। तहिना जीवनक हरेक मोड़पर सुख-दुखमे साथ देनिहार धर्मपत्नी किरणजी केँ स्नेह भरल अभिवादन! आ हमर साहित्य लेखनक ऊर्जा रहल पुत्री प्रीतिकेँ दिलसँ धन्यवाद। एकर अतिरिक्त हमर साहित्यिक जिनगीमे प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रुपेँ सहयोग केनिहार सम्पूर्ण मित्रगण, आफन्तजन, तथा बन्धु-बान्धवमे बेर बेर सलाम ।

अन्तमे हमर ई पोथी ''नेपालक नोर मरुभूमिमे''क डिजाइनकर्ता प्रीति ठाकुर जी केँ दिलसँ धन्यवाद देबऽ चाहब। तहिना प्रिन्टिङ आ टाइपसेटक लेल अजय आर्ट तथा प्रकाशनक लेल श्रुति प्रकाशन प्रति सदैव ऋणी रहब। एकर अतिरिक्त पाठकवर्गसँ सादर निवेदन जे ऐ पोथीमे रहल गलतीकेँ सूचित कऽ आगूक लेल जरुर मार्गदर्शन करी ।

धन्यवाद !

विन्देश्वर ठाकुर

अनुक्रम

गजल खंड

1

नेपालक नोर मरुभूमिमे 11

पान सन पातर ई ठोर अहाँकेँ

अहाँ छी चान्द हम चकोर अहाँकेँ

जुनि घबराउ सब नीक भऽ जेतै

अहाँ छी राइत हम भोर अहाँकेँ

संसारक गति बदलि जाए मुदा

अमर रहै प्रेमक डोर अहाँकेँ

समय पैघ बलवान छै अपने

नै चलत ओइ आगू जोर अहाँकेँ

नै बहाउ नयनसँ नोर कनियों

मोती सन मोल अछि नोर अहाँकेँ

(सरल बार्णिक आखर-१३)

2

भक्ति गजल

अहीँ छी हमर भवानी मैया हम अहाँकेँ मानै छी

करब सब दिन पूजा पाठ मनसँ हम ई ठानै छी

उजड़ल घर बसाबू माँ एना किए फटकारै छी

राति भरि निन्द नै आबै सदिखन अहाँ लऽ कानै छी

क्षमा करु या सजा दिअ हम तँ अहींक सन्तान छी

अज्ञानी हम पुत्र अहाँकेँ बिधान ने किछु जानै छी

चिनी लैताह दूध लैताह कही न माइ गै बाबुकेँ

लड्डू आ पेड़ा हमहूँ बनेबै तैं तँ चिक्कस सानै छी

अहीँ जननी दुख हरनी करु हमर उद्धार हे

शक्ति स्वरुपा जगदम्बे हम अहाकेँ पहचानै छी

(सरल बार्णिक आखर:१९)

3

गजल

सब खुशी भेटत बस मन होबाक चाही
सरकारी नोकरी लेल धन होबाक चाही

जङ्गल उजड़लासँ रोग सभ बढ़लै
स्वस्थ रहबाक लेल वन होबाक चाही

दानव चपेटामे पिसा रहल लोक एतऽ
रावन ला रामके आगमन होबाक चाही

बात बनौलासँ केवल काम कोना चलतै
घर सुद्धी करब तँ हवन होबाक चाही

जनताकँ खून चुसने नेता जी कहै छथि
चुनाबमे उपरका सदन होबाक चाही
(सरल बार्णिक आखर:१६)

4

बाल गजल

विन्देश्वर ठाकुर

आइ दिन भरि सुतले छी

खटिया उपर चढ़ले छी

माए लेलक नहि कोरामे

तै सँ दिन भरि रुसले छी

हम सुकना सँ की कम छी

अङ्ग्रेजी नेपाली पढ़ले छी

काका मूर्ति दैत बजलाह

बौआ तोरा लेल गढ़ले छी

रोहितक बाबू दूसत की

ओकरासँ हम बढ़ले छी

(सरल बार्णिक आखर:१०)

5

बाल गजल

नेपालक नोर मरुभूमिमे

भैया सँगे हमहूँ जेबै

दही चूरा हमहूँ खेबै

सुटबासँ झगड़ा भेलै

ऐ छौड़ा के मूँह तकेबै

मन लगा कऽ पढ़बै तँ

पुरस्कारो हमही पैबै

काल्हि स्कूलमे दौड़ हेतै

ओहूमे हम एक एबै

हमरो जँ भाइ हेतै तँ

गीत नाद खूब सुनेबै

(सरल बार्णिक आखर:९)

6

भक्ति गजल

हम छी बालक कनी ध्यान दिअ मैया
निर्बुद्धी आ निमुखाके ज्ञान दिअ मैया

छी हम अभागल जन्मेसँ आइ धरि
गाममे जीबाक लेल शान दिअ मैया

नित्य दिन धूप आ आरती उतारब
भक्ति भरल हमर प्राण दिअ मैया

मरितो छनमे रही समीप अहाँकेँ
एहन अनूप बरदान दिअ मैया

लाल चुनरी चढ़ा जयकार लगाबै
कोखिसँ एहन सन्तान दिअ मैया

सरल बार्णिक आखर : १४

7

गजल

नेपालक नोर मरुभूमिमे 17

भाङ्ग आ गाजा खेने छी

तोरो ला किछु लेने छी

माए देलक मुरही

ओहो झोरामे धेने छी

चटनी खिएबौ मीता

अल्लू सेहो पकेने छी

हरी चोरौलक ढ़ौआ

तैसँ दूर भगेने छी

चल आइ पियो लेब

भट्टीबाली पटेने छी

(सरल बार्णिक आखर: ८)

8

गजल

धीरे-धीरे स्नेह बढ़ाएब हम

करेजसँ भले सटाएब हम

बिनु अहाँकेँ जियब नै कखनो

जिनगी अहीँपर लुटाएब हम

आँखिक तारा छी अहाँ ऐ सजनी

छोड़ि कऽ कहियो नै जाएब हम

अहाँ ला सदिखन हँसि मरब

कहियो नै नोर बहाएब हम

प्रेम अहाँकेँ पवित्र अछि प्रिय

तइसँ नै गंगा नहाएब हम

(सरल बार्णिक बहर आखर:- १२)

9

गजल

नेपालक नोर मरुभूमिमे

पिया जी एलखिन होलीमे

जैबै हमहूँ आब डोलीमे

नानीके देल एकटा थाली

खैबै हम ओही घकोलीमे

दियर ननदि सेहो अछि

मजाक करबै रङ्गोलीमे

सासुके हम मनाए लेबै

जादू अछि हमरा बोलीमे

पेटीमे छैक बड़ सम्पति

धरब नुका हम चोलीमे

(सरल बार्णिक बहर आखर:- १०)

10

गजल

होलिकाकँ फेर जरैबै एहिबेर के होलीमे

पूरी सँगे माउस खैबै एहि बेर के होलीमे

भैया के साली आएल छै दीदी के ससुरारिमे

चुपे हम रंग लगैबै एहि बेर के होलीमे

खराब रंग सभक लेल हानिए होइ छै

तैं तँ नीक रंग मंगेबै एहि बेर के होलीमे

खट्टर कक्का बुढ़िया दाइ सब केउ झुमतै

हँसि हँसि चोली भिजेबै एहि बेर के होलीमे

नै झगड़ा नै झंझट कोनो हेतै ऐ समाजमे

खुशीके बरखा करेबै एहि बेरके होलीमे

(सरल बार्णिक आखर : १७)

11

गजल

नेपालक नोर मरुभूमिमे 21

माघे संक्राति एहू बेर आबिए गेल

हम बौआइत छी एखनो कतारमे

लाइ-मुरही खेताह भाइ ओइठाम

हम टौआइत छी एखनो कतारमे

झगड़ा रहै भाइसँ तीलक लाइ ला

हम खौझाइत छी एखनो कतारमे

दू साल पहिने पिटने छल भाइजी

हम खिसिआइ छी एखनो कतारमे

पैसाक पाछू जिनगी नरक बनल

हम कमाइत छी एखनो कतारमे

(सरल वार्णिक बहर- आखर १४)

12

गजल

देखब मनमानी कतेक दिन करै छी

बिधवा सँग कहानी कतेक दिन करै छी

समय चक्रमे अहूँ मुरछाएब

जीवनकँ गुलामी कतेक दिन करै छी

मानव भऽ मानवता सिखू

दोसरकँ गुलामी कतेक दिन करै छी

मलिन नै करु मिथिलाक सँस्कृति

बौवा-बुच्चीक ढुवानी कतेक दिन करै छी

समएमे एखनो नीक पथ रोज

मानवताक ग्लानि कतेक दिन करै छी

शेरो-शाइरी खंड

हमर नाम बेचिकऽ खाएबला चोर छै

हक अधिकारला लजाएबला चोर छै
अपने भाइ-बापक गर्दन काटिकऽ
खूनक समुन्द्रमे नहाएबला चोर छै

सब ढलिया हमरे आगू पाछू ठार छै
लगै जे बालुके उचका पहाड छै
उखरलो सुथनी नै उखरतै जेकरासँ
ओहो अपन अलगे राज ला बेहाल छै

एककँ पाछू बेहाल नै बनू एना
आँसू गिराकऽ दु:खहाल नै बनू एना
मिलत जरुर पुन:सपनाक रानी अहाँकँ
बेवफाक पाछू कङ्गाल नै बनू एना

पेटभरि खाएब कठिन छै एतऽ

नेपालक नोर मरुभूमिमे 25

रोजगारी पाएब कठिन छै एतऽ

नेता लोकनि भले जे किछु बाजि लय

बेरोजगारी भगाएब कठिन छै एतऽ

इजोरियाक आसमे अन्हार भेल जिनगी

जीवनक हर साँसमे पहाड़ भेल जिनगी

पास रहितो अहाँक हम घुटि-घुटि मरै छी

लागै चारू तरफसँ निराश भेल जिनगी

खाएब अहूँ संगे-संग तँ

चलू लतामक पेड़पर

मट्टीके बरसात करब तँ

चलु कतारक बसेरपर

आउ साथ मीलि किछु योजना बनाबी

मैथिली दुश्मन सभकेँ दूर भगाबी

तखने बनत भविष्य मिथिलाकेँ

तँ किए ने अपन प्रदेश गमकाबी

हरवक्त याद ओकर जान मारैय

रातियो कऽ निन्दकेँ हरान करैय

हम बौरा गेली साथी सभ कहैय

अहीं कहू किएक परेशान करैय

प्रेम दिवस(१४ फरबरी) क अवसरपर हृदयसँ निकलल मर्मस्पर्शी भावना...

नै सोचू नै घबराउ अहाँ

एक दिन हम जरुर आएब

संगमे दसैं तिहार तथा

भ्यालेनटाइन सेहो मनाएब

दुश्मन कतबो दुवारपर होइतो

लाख कोसके बीच होइ छै

प्रीतम दूर पहाड़पर होइतो

घर-आङनके बीच होइ छै

आजुक दिन प्रेमक प्रतीक

प्यार करी से मन करैय

अहाँ संगक झगड़ा-प्यार

दुनु हमरा याद अबैय

I LOVE ....her

I MISS ....her

चलू आब बिश्राम करी भैया

फेसबुक हटा कऽ अराम करी भैया

लजैनी जेहन लजाएब अहाँ

लग जतेक आएब अहाँ

टक लगा हम देखते रहब

घुङ्घटा जखन उठाएब अहाँ

नै किछु लिखै छी बाप रौ बाप

दारुए पिबै छी बाप रौ बाप

कविता प्रतियोगितामे प्रथम पुरस्कार

खुशीसँ जिबै छी बाप रौ बाप

अहाँ सभ राति भरि जागल रही

बस फेसबुकपर लागल रही

संसार बदलैसँ पहिने अपना बदलू

बिपना पाबऽसँ पहिने सपना बदलू

जँ जीबित राखब खोप भितरकँ चिड़िया

निफिकिर साथ उपरका झपना बदलू

इच्छा रहितो ई जीवन बिताएब कोना
मन रहितो ई सिन्दूर लगाएब कोना
अहाँ छी हमर पिछला प्रीतम जरुर
मुदा हुनका छोड़ि अहाँ संग जाएब कोना

की कहू कते कहू बड़ बड़ लीला छै
मोछबला नेता सभकँ नड़ौटी ढीला छै

हे सुथनी सन बात नै करू
डरछेरुवास आब नै डरू
बड़ सहलौं अत्याचार अहाँ
आबो तँ अधिकार लेल लड़ू

गेल छल दारू पी कक्का बजारमे

पाछुएसँ मारलक छौड़ी धक्का बजारमे

मिथिला राज लेल धरना करै छी

बात-बातपर झगड़ा करै छी

बेइमाने आ भ्रष्टाचारे करब तँ

नाहकमे किएक धरना करै छी

आबू समीप चलू नैन लड़ेबै

करेजसँ अपन करेज सटेबै

प्रेमक दीपसँ इजोर छै दुनियाँ

खुल्ला आकाशमे घर बनेबै

राति अन्हरिया अहीं संग काटब

दु:ख सुख सब दुन्नू मीलि बाँटब

मेघ गरजै आ बुन्द बरसै कतबो

फुटल आकाशकेँ स्नेहसँ साटब

निन्द हेरा गेल चैन हेरा गेल

नोर बिना जे नैन हेरा गेल

मन छल नीकसँ राति भरि सुतितौं

यादमे सब अमन-चैन हेरा गेल

तन थकित आ मन बेपीड़ित भऽ गेल

साँस चैनकेँ जेना पछिया उड़ा कऽ लऽ गेल

काल्हि धरि जे जिनगी रमनगर लगैत छल

सब दु:खकेँ मोटरिया आइ अइठाम धऽ गेल

सपना स्वर्गक देखा कऽ

जिनगी नरकमे गिरा देलियै

प्रेम हमरासँ कऽ कऽ

सेनुर दोसरेसँ भरा लेलियै

रिमझिम-रिमझिम पाइन
आजु पड़ै कतारमे
देह सिहरै मनो खुशी
आजु लगै कतारमे

अहूँ जीबू हमहूँ जियब
सब कियो इन्सान छी
जीवन पथपर मीलि चलू
सब कियो अंजान छी

स्नेहक तार टुटल सबसँ
जिनगी जिअब कल्पना भेल
काल्हि धरि जे अपन छल

आइ गरीबइमे सपना भेल

जिनगी जिअब पहाड़ लगैय

भेल पिया परदेसिया

अपने पयरमे कुड़हरि लागल

भेलहुँ हम दुदुसिया

स्वतन्त्र देशक स्वतन्त्र नागरिक

आजु नेश्नल डे अछि कतारमे

एतऽ धूम-धामसँ नाचै सब केउ

बड़ भीड़ अछि देखल बजारमे

भौतिकवादकेँ शिकार भेनिहार सभ

सुपनेखा सजा कऽ सीता बना देलक

साहित्यमे फुर्ती देखेनिहार सभ

गजल चोरा कऽ कविता बना लेलक

राइतमे हम खबुस खाइ छी

सुबहमे हम कामपर जाइ छी

जखने बेसी थाइक जाइ छी

फेसबुक चला कऽ मस्त भऽ जाइ छी

अहीं छी ज्ञानकेँ देवी मैया

अहीं छी भाग्य उदायनी

हम अबोध बालक अहाकेँ

अहीं हमर बिद्यादायनी

मैथिल कहैत जखन माथ झुकेलौं

भाषा बजैत जखन ओठ लरबरैलौं

हम बुझी कोना कर्मयोगी अहाकेँ

जौं छी मैथिल तँ पोस्ट मैथिलीमे करू

साँस अटकै मुदा मौतसँ नै डरू

सदा रहब अमर अहाँ इतिहासमे

रङभूमिमे अथवा रजाइएपर मरू

बिनु समर्थनकेँ किछु नै भेटत एतऽ

नै छिनने अधिकार भेटत एतऽ

सब छथि स्वार्थी आ दलाल मात्र

गोरतर धऽ कऽ घसीटत एतऽ

आइ फेर सपनामे मिथिला देखलौं

पछिला साथी संगी सभसँ भेटलौं

आँखि खुलल तँ अपने बिछान पर

भावनाक लहरमे करेजसँ सटलौं

समीप अपन कने आबऽ दिअ

करेजसँ हमरा लगाबऽ दिअ

बड़ तड़पेलौं अहाँ एखन धरि

आबो तँ प्यास मेटाबऽ दिअ

प्रेममे हम शायद आब पागल भऽ जाएब

बिनु उत्सव बिनु मौसमकँ बादल भऽ जाएब

ओ जेतीह पिया घर डोलीमे सजि कऽ

हम भरि जिनगी ला अभागल भऽ जाएब

हमर जिनगीकँ कोनो हिसाब नै रहल

पढ़बाक लेल कोनो किताब नै रहल

बैसल छी एखनो असगर एकान्तमे

किन्तु पीबाक लेल कोनो शराब नै रहल

हमर सूरति अपना आँखिमे सजा लिअ
अपन मनकेँ फुलवारीमे हमरे बसा लिअ
राखब हथेलीपर सदखनि ऐ कनियाँ
एक बेर बस हमरासँ मांग भरा लिअ

पएरक पायल झमकैत रहै अहिना
चान सन चेहरा चमकैत रहै अहिना
अनुपम छी फूल अहाँ हमरा बगैचाकेँ
दिग-दिगान्तर धरि गमकैत रहै अहिना

सुतलमे चेहरा अहाँकेँ सपना बनि अबैय
विपनामे बिम्बसँ भरल रचना बनि अबैय

अशाकेँ दीप संग निराश भेल ठाढ छी हम

सिहकै हवा लगै जेना साजन बनि अबैय

सब केउ के आगू आबै पड़त

एहि रोगके जड़सँ मेटाबै पड़त

जँ चाहै छी स्वस्थ आ दुरुस्त प्रदेश

दहेज मुक्त मिथिला बनाबै पड़त

अहाँ लेल प्रेमक किताब रखने छी

बुझू धड़कन के हिसाब रखने छी

अहाँ डालर बनू भारु हमहीँ बनब नै कोनो बात

अहाँ सोम रस बनू दारू हमहीं बनब नै कोनो बात

हमर मर्जी घर-घर चाटब

जकरा पाएब तकरा बाँटब

पिया भेल विधायक हमर

तोरा कि हम नङ्गटे नाचब

हम बूड़ि छी तैं बिदेशमे आएल छी

अहाँ ज्ञानी छी तैं घरमे नुकाएल छी

लघुकथा खंड

सपनाक अवसान

एक दिन रमलोचना आंगनमे सँ महेस महेस... किलोल करै छथि। तखन चौकियेपर सँ काकी कहै छथिन, बौवा एम्हरे आउ- काकीक मन बड़ पिड़ाएल आ मन खिन्न रहए। रमलोचना गामक बेटा आ महेसक संगी छला। बुढ़िया रमलोचनाकेँ बजा कऽ महेशक खिस्सा सुनबैत छथिन।

"महेस जे तीन साल पहिने गेल छला -कतार अपन सपना पूरा करबा लेल। जेबाक बेर अत्यन्त हर्षित, माए ला घर बनाएब, पत्नीक लेल नीक कपड़ा, बच्चा-बुच्चीकेँ नीक स्कूलमे पढ़ाएब आ जवान बहिनक शादी करब। हतपतमे पास्पोर्ट बनौलक। अपन कियो नै रहै विदेशमे। तैयो घरक पड़ोसी मदनकँ सहयोगमे हुनकर मामासँ भीसा मङौलक। पहिने कनिए पैसामे भऽ जाएत कहितो प्लेनपर चढ़ऽसँ पहिने १ लाख नगद लेबाक जिद करऽ लागल। पैसा नै भेलाक कारणे दोबरके कागज बनबा लेलक। आब दूध-माछ दूनू बाँतर भऽ गेलै महेसकेँ। की करत? घरमे सब सदस्यकँ आँखिक नोर पोछैत ओ गेला कतार। मुदा हुनका सभकेँ नै चाही एना, काम नाथुरकँ कइहक दिन-राति धुपमे तबूक

उठाएब आ देह धुनिकऽ बिल्डिंग कन्सट्रक्सनमे काम करब। नै खेबाक नीक व्यबस्था, नै सुतबाक। कम्पनी सेहो सप्लाइ।

घरक याद बड़ सतबै महेसकेँ। मुदा प्रतिज्ञाक अटल रहथिन महेस। कतबो दु:ख पीड़ा होइतो काम नै छोड़थिन। ओइठाम ब्याज बढ़ि कऽ घर गिरवी रखबाक स्थिति आबि गेलै। एतऽ पगार जहिना के तहिना। दिन-दिन सोचि-सोचि कमजोर भऽ गेल बेचारा महेस। एक दिन काम करैत काल करेन्ट लागि गेल हुनका। साथी-संगीक सहयोगमे अस्पताल लऽ जा जान बचलनि। मुदा हाथ बिना काम के भऽ गेल। ऊपरसँ कम्पनी, तोरा गल्तीसँ करेन्ट लागल आ कम्पनीकेँ समान सभ नोकसान भेल, कहैत मास सेहो काटि लेलक। शरीर बिना कामकेँ भेलासँ उपचार करेबाक बदला महेसकेँ घर पठा देलक। महेसकेँ आँखिसँ नोर बर-बर टपकैत रहल।

घर पहुँचलाक बाद ओ माएक स्थिती देखि बौक भऽ गेला। जेना मुँहसँ किछु अबाज नै निकलल। माय सेहो अन्तिम साँस रोकने बस महेसक लेल। बौवा-बुच्ची बाबूक सनेसक प्रतीक्षामे। पत्नी लेल सेहो किछु नै। हाथ खाली। बड ग्लानि भेलनि महेसकेँ।

किछु दिन बाद उपराग सबसँ महेसक धैर्यताक बान्ह टुटि गेलै। ई बान्ह बड मजबूत होइ छै आ टुटलापर सर्वनाश होइ छै। ईएह भेल महेसक साथ। अपन जबान बहिनक विवाह दहेजक कारण नै भऽ सकल आ गामक लोगक ताना सुनि-सुनि ओ पागल भऽ गेला।

महेस, बहीनक सृष्टि लऽ कऽ रक्षा करब, उद्देश्य रखने हमर बेटा ऐ गरीबीक चपेटामे जिनगी नरक बना लेलक। आ हम सभ दर-दर भटकि रहल छी। अते कहैत बुढ़ियाक आँखिमे नोर भरल आ जोर-जोरसँ चिचिया उठल आ धिया-पुता जकाँ हुचकि -हुचकि कानऽ लागल।

भुखाएल जानवर सभ

१

आइ भोरेसँ कतारक सभ ठाम आन्धी-तूफान बिर्रो आ बिहाड़ि ततेक ने भेल जे बुझू पानिक नै माटिक बरसात भेल आ एखनो तक भऽ रहल छै। हमरा बुझि पड़ैत अछि जे दिन भरि पड़िते रहत। ओना हम दुखित नै छी आ रहने हएत की? कारण प्रकृतिकेँ पराजित केनाइ असम्भव। ई आजुक हवा किछु बेसी क्षति तँ नहिए केलक। तखन छै की तँ हवा संगे आएल बाउलक कण सभ आँखिक भौह आ पपनीमे ठोका-ठोका मजा लुटि रहल छल। जखन कामपर निकललौं तँ हजारो सपना उड़ा कऽ लऽ गेल बिहारि सीमरकेँ रुइया जकाँ अपना साथ गगनमे। तैयो हम प्रसन्न छी ई सोचि जे काल्हि धरि जे सपना केवल आँखिक भित्तामे सजाओल छल आइ तँ कमतीमे हवाक सहारासँ अकाशमे सूर्य, चन्द्रमा एवम् तारा संग भरिपोख मनोरंजन तँ लैत हेता.. खुशीसँ तँ झुमैत हेता, आ अपन सफलतापर खुशीसँ तँ नचैत हेता।

२

कतेको दिन बाद आइ फेर सप्तरङ्गी आकाश देखऽमे आएल। मौसम पूरा साफ आ बुलन्द। ऊपरसँ टिप-टिप पानि पड़ि रहल जेना बसन्तक आगमन भेल हुअए। मुदा मन्टुटियाक आँखि नोरसँ भरल। पिजड़ामे कैद भेल सुगा जेहन छटपटा रहल। सच मानू तँ ऐठामसँ भागि जेबाक प्रयासमे, मुदा ई असम्भव।

मन्टुटिया एकटा नेपाली नारी अछि जे १ साल पहिने कमेबाक लेल कतार आएल रहए। गामपर घरबला दोसर महिला संगे विवाह कऽ एकरा छोड़ि देलाक बाद अपन एकटा बेटीकेँ माए-बाप लग राखि दर-दर ठोकर खाइत कतार पहुँचली। एतौ ओतेक नीक काम नै मुदा एक गोट शेखकेँ [मालिक] घरमे कामकाज मिललै। दु:ख तँ बड़ छलै तैयो अपन बाध्यता आ विवशता देखि दिन काटऽ लागल।

मन्टुटिया देखऽ मे पातरे-छितरे, सामला रङ्ग, ने बेसी नमहर, ने बेसी छोट, लगभग २५ बर्षक कड़ा जवानी। छोट-छोट आँखि आ दहिना गालपर तिलबा ततेक ने सोभै जे लोक सभ पछाड़ि लागि जाइ। ओना काम घरक करितो शरीरकेँ सिट-साट कम नै करै। कतेक दिन तँ ड्राइभर लोकनि सेहो रुपैयापर प्रस्ताव आगू बढ़ौने रहै पर ओ सभ सफल नै भेला, कारण इज्जत बेचि खाएब मन्टुटियाकेँ पसन्द नै छलनि।

कतारक राजधानी दोहासँ २ किलोमीटर पश्चिम नजमा जाए बला बाटमे *होली डे बिल्ला* होटलक पछाड़ीमे मन्टुटिया मालिकक घर छै। अपने

बुढ़बा २ टा शादी कएने छथि आ एखन ५५ सालकेँ भऽ गेला। बुढ़बाकेँ १ बेटी आ ४ बेटा मिला कुल ५ गोट धिया-पुता छलनि। जइमे जेठ बेटीक विवाह भेल छै, सहुदीए रहै छै कहाँ-दन। बाँकी सभ कुमारे। खुल्ला साँढ़ जकाँ।

हिनकर बेटा सभ ततेक ने छिचोरा जे शुरुए दिनसँ मन्टुटियाक पछाड़ी हाथ धो कऽ पड़ल छै। अतेक दिन तँ कोनो विधी बचि गेल। मुदा आजुक दिन मालिक दुनु मलकानिक संग हुमरा करबा लेल सहुदी गेल। एहने मौकाक इन्तजार छलै ओइ कौवा-चिल सभकेँ।

भरि दिन कतऽ रहै नै पता मुदा साँझ पड़िते धम-धम चारू भाइ आएल। प्रमुख गेट बन्द केलक। अपन कोठामे जा खाना देबाक लेल किलोल केलक। मन्टुटिया खाना लऽ जखने आएल ओहो गेट बन्द भऽ गेल। निच्चामे पान-परागक पौच, मेग्डोल [शराबक] बोतल तैयार, जेना पूर्व योजना रहै। साथै टि.भी. मे *थ्री-एक्स* प्लेयर लगा काम उत्तेजनाक प्रयासमे। एकर अतिरिक्त एकटा कोनो गोली रहै जे जूसमे धऽ कऽ मन्टुटियाकेँ पिया देलकै। मन्टुटियाक सरपर कामदेव ताण्डब करऽ लागल। रङ्गमंच रन्कैत गेल। नाटक क्लाइमेक्स तरफ बढ़ैत गेल। धीरे-धीरे सबकेँ जवानीक भूत चढ़ैत गेल आ भुखाएल जानवर सभ मन्टुटियाकेँ लुटैत रहल, मन्टुटिया लुटाइत रहल, लुटाइत रहल...... बस लुटाइत रहल ।

३

आइ फेर कतेको दिन बाद हमरा मनमे एकटा सम्झना के लहर उठल। मन अस्त-व्यस्त भऽ गेल। बचपनमे साथी सभ संगे खेलैत छली जे बालु-बालु आ चोरा-नुकी, ओ सभ आइ बहुत याद अबैत अछि, कारण ऐठाम आइ ओहने बाउल देखलौं। मुदा किछ फरक तँ अवश्य छै, एकर गन्ध, एकर रङ्ग आ एकर स्वादमे। अपन मिथिलाक बाउल जइपर हमर बाल्यकाल बितल, नाना प्रकारक खेल खेललौं, ओ कतेक पवित्र छल। कतेक मर्मस्पर्शी लागए। एखनो छी दिन राति बाउलमे मुदा ओतुका स्नेह, अभास केवल मनमे, आत्मामे आ शरीरक खूनमे मात्र सीमित अछि। शायद हमर दुर्भाग्य अथवा प्रारब्धक फल कही, हम अविछिन्न रुपमे अपन मातृभूमिकेँ पुकारि रहल छी एतुका रेगिस्तानमे, सामुन्द्रिक लहरमे, उँचका महलमे आ नमहरका गाड़ीमे, मुदा अस्पष्ट, असम्भव आ घनघोर अन्धकार लगैत अछि अपन माटिपानि, अपन संस्कृति। सोचैत छी हम किएक एलौं एहन उजाड़, पतझड़ आ मरुभूमिमे। फेर दोसर मन कहैत छथि ऐठामसँ तोहर घर परिवार आ नून तेल चलैत छौ। तो एकरा मरुभूमि कोना कहि सकैत छिही? हवा, पानी, अन्न सभ किछु एतुका खाइत छें। अतेतऽ की परिवारकेँ बचबाक आधार छौ ई रेगिस्तान, तँ तो कोना एकर अपमान कऽ सकैत छें ? हम निरुत्तर भऽ जाइ छी। निस्तब्ध भऽ जाइ छी।

प्रेम-पत्र

हमर प्राणप्यारी नम्रता,

मन भरिकेँ माया आ स्नेह मात्र अहाँकेँ।

हम ऐठाम कुशल रहि अहाँक कुशलताक कामना करै छी। अहाँक वियोगमे बिना पानिक माछ आ बिना नेहुक मांस बनल हम एतऽ परिवारक भरण-पोषण लेल श्रमजीविक टोपी लगा दिन काटि रहल छी।

काल्हिक फोनसँ सच्चे हमर मन बड़ दुखित अछि। अहाँक उपराग छल जे हमरा बिसरि गेलौं, बराबर फोन नै करै छी। अहाँकेँ हमर खियाले नै अछि। मुदा सत्य ई नै छै। किएक तँ हम तँ बस शरीर छी जइकेँ आत्मा अहाँ छी। जौं श्वास लेबऽ बला फोकसो हम छी तखन अक्सीजन तँ अहाँ छी। आब अहीं कहू जकरा बिना हम एक पल बाँचि नै सकब ओकरासँ अलग रहबाक कल्पना कोना करब? मुदा तैयो

परिस्थिति लोककेँ दोसरकेँ सामने विवश कऽ दै छै। आन लग काम करब, ओहो प्रचण्ड गर्मीमे, बड़ पैघ बात छै। घरमे बसिया-कुबसिया किछु नै खाइ छलौं। मुदा एतऽ सुखल खबुस चिबाएब लत भऽ गेल अछि।

नेपालमे रहैत काल विदेश माने स्वर्ग हएत, से कल्पना करै छलौं। ओतुक्का लोक सभ आनन्दसँ, खुशी साथ जीवन बितबैत हेता, से भ्रम छल। पैसा जेना गाछसँ हिला कऽ लाखक लाख पठबैत अछि, तहिना बुझाइ छल। शायद एखन अहूँ ओहे सोचैत हएब । मुदा देखू हृदेश्वरी, सत्य ई नै छै। स्वर्ग कहल ई जगह वियोगा भासमे तड़पि-तड़पि मरऽ बला स्थान छै। एतऽ पैसाक महत्व संगे मनुष्यक खरीद-बिक्री होइ छै।

दोसर दिस रातिमे अहाँ संग बिताएल ओ पल सभ, स्नेहक तीत-मीठ गप-सप बिढ़नीक खोता जकाँ हमरा मानस पटलमे आबि कऽ निन्द तोड़ि दैए। कखनो-कखनो विदेश छोड़ि कऽ अहीं संग ओइ ठाम साग-पात खा दीबसँ गमएबाक इच्छा होइए। मुदा बिगतकेँ दु:ख, दर्दसँ मन तरसि जाइए। सच्चे नीक खाना, नीक कपड़ा आ नीक गहना लेल कतेक तरसि गेल छलौं। नीक खाएब आ नीक लगाएब सपना भऽ गेल छल।

एतऽ आबि परिवार टेबब एकटा किनर मिलल अछि। दायित्व पूरा करबाक एकटा सहारा अछि। हम एतबेमे खुशी छी। मुदा तैयो फोन करबाक पर्याप्त पैसा आ समए नै हएब, दोसरकेँ बसमे बड़द जकाँ जोताएब, घर-परिवारसँ दूर रहब चिन्ताक विषय थिक।

एहन बिषम परिस्थितिमे हमर साथ देब, आत्मविश्वास बढ़ाएब, अपनामे धैर्यताक बान्ह मजबूत राखब, अहाँक कर्तव्य अछि। कारण अहाँक धैर्यता आ आत्मविश्वासे प्रवासमे हमरा हौसला प्रदान करत।

अन्तमे समय-समयमे फोन करैत रहब से वाचाक संग एखन विराम। बाँकी दोसर पत्रमे।

अहाँक स्नेही

एकान्त राम

मरुभूमी टोल, कतार

विहनि कथा खण्ड

बिपतियाक विदेश

कतेको दिनसँ मुँह घोकचौने बिपतियाकँ ओठपर आइ भरल मुस्कान अछि। कारण तीन महिनाक बाद पश्चिम दिससँ चान्द उगल। माने कम्पनी आइ तलब देबाक लेल राजी भेल। तीन महिना धरि बिभिन्न बहाना बनाकऽ टारैत छल। अगला महिना अगला महिना अगला महिना..... । मुदा तीन महिना बाद कामदार सभ जब उखरल तँ कम्पनी सेहो विवश भऽ गेल सेलरी देबाक लेल। मुदा ओतेक सोझिया नै रहै कम्पनीक मनेजर। लेबर सभकैँ ठकि फुसला एक महिनाक तलब देलक आ २ महीनाक राखिए लेलक। अन्तत: जे होइ, सभ कामदारकँ खुशी भेलनि। बिपतिया सेहो खुशी भेला।

सेलरी लऽ पैसा गनैत अछि तँ मात्र पाँच गोट नमरी। पहिनेसँ आएल मुस्कान बिपतियाक मुहसँ बिला गेलै। ओ चिन्तित भऽ गेला। कारण खानाक पैसा बङ्गालीकैँ उधारिए छलनि। चुल्हा चौका चलाएब हेतु घरमे पठाबै पड़तनि। ओतबे कहाँ महन्थासँ लेल ढौआ नै बुझेता तँ ५०००० के सुइद-सुइद जोड़ कऽ २ लाख बनाइए देतै। आब की करता?

बिपतिया गम्भीर सोचमे पड़ि गेला। "घर परिवार छोड़ि कऽ सात समुन्द्र पार एला पत्थर फोड़ऽ मुदा तैयो घर नै चलल आ पेटो नै चलल, धिक्कार अछि हमर मेहनत आ हमर कामकेँ- बरबड़ाइत आ लथरैत *ZEKREET* क *trust exchange* मे जा *प्रभु मनी ट्रान्सफर* द्वारा पत्नीक नामसँ खाना पैसा सभ पठा देलक। आरो नै किछु तँ ओइ महन्था धनिककँ कर्जा तँ सधतै।

बहसल कनियाँ

-गामबाली दीदी, जनकपुर जाइ छी? रुकू कनि हमहूँ जाएब। समान सभ लेबाक अछि हमरो आ आरो बहुत रास काम अछि ।

- नै यै कनियाँ, हम अहाँकेँ लऽ कऽ नै जाएब, अहाँक सास बड नङटिनी अछि। हमरा बेसतरि कऽ कऽ धऽ देत।

-दूर जो, झाँटब बारहनिसँ बुढ़ियाकेँ। कमाइ छथि बिदेशमे हमर घरबला आ कोह कटै छै ओइ लटलहबीकेँ। तँ ने बेजाय, २४ घण्टा हनहन पटपट करिते रहैए ।

-ओ जे कहै छथिन सेहे करियौ ने से। किए नै चलै छी हुनकरे जूतिमे?

-यै दीदी, हम कहाँ पढ़ल, लिखल धनिकाहा घरक बेटी, सभ दिनसँ लैस लम्फा कैने, शहर बजार घुमने, चारि घाटक पानि पीने। मुदा ई हमरा गाइ-महींस जकाँ बान्हि कऽ घरमे रखै छथि तँ कोना रहबै। ऊपरसँ हमर पति तँ मुट्ठाक मुट्ठा रुपैया पठबिते अछि तँ की गम हमरा? अहाँ छोड़ू ई बात सभ, चलू.. चलू .. जल्दी, ट्रेन छुटि जाएत।

न्याय

स्कूल जाइ काल एकटा लड़कीकेँ ओहे गामक मुखियाक बेटा अपना हबसक शिकार बना लेलक। ई घटना सुनलाक बाद स्कुलिया छौड़ा सभ ओकरा बड़ पिटलक। ऐ घटनासँ हुनकर बाबूजीकेँ अपन पगड़ी खसबाक भान भेलै आ अपन बेटाक करतूतपर पर्दा देबाक लेल पञ्चायत नै करबाक घोषणा केलक। मुखियाक एहन पक्षपात देखि पूरा समाज मीलि कऽ एक निर्णय केलक जे न्याय आखिर न्याय होइ छै। आ सबकेँ साथ उचित न्याय हएब आवश्यक छै चाहे ओ राजा हुअए या प्रजा। तैं पञ्चायत हेबाक चाही तथा दोषीकेँ कर्म अनुसार उचित सजाय भेटबाक चाही। समाजक आगू मुखियाक कोनो बस नै चललै। ओ पञ्चायत करबाक लेल विवश भऽ गेल। दोसर दिन भोरे पञ्चायत बैसल आ उचित न्याय भेल।

जेहन करणी तेहन भरणी

साँझक समयमे बुढ़िया अपन नवकी पुतौहकेँ लऽ कऽ पोखरि-झाखरि जाइ छल। तखने ओम्हरसँ रामगंजवाली अबै छली। बिच्चे बाटमे दुनुकेँ भेंटघाट भेल आ रामगंजबाली पुछलक बुढ़ियासँ -

-यै काकी, एकटा बात फेर सुनलिऐ, केनादन सच्चे?

-गे कि सुनलहीय से?

-ऐ बुढ़िया धनगढ़ीवाली दिया नै सुनलिऐ से, कहाँदन दोसरो घरबला छोड़ि देलकै?

-हँ गे, सुनलियय हमहूँ। दूर बररुपियाकेँ कोन बात। बुढ़ारीमे घिढ़ारी करऽ जेतै तँ अहिना हेतै ने।

-हँ यै काकी, हे घरमे ककरो नै गुदानै छलै। अपने मनसँ जे जे मन होइ छलै से से करै छलै। घरबला बिचरा परदेशिया २ साल ३ सालमे एक बेर अबै छलै आ फेर चलि जाइ छलै। मुदा ढौवा रुपैया सभ एकरे नामपर पठबैत छलै। कोनो चीजक तकलीफ नै। से रंडिया दुन्नू बच्चोकेँ छोड़ि कऽ सभ ढौवा लऽ कऽ ओइ चमरबा मरदबा संगे कोना उढ़रि गेलै? आ आब जखन ढौवा चूसल भऽ गेलैय तँ लात मारि कऽ भगा देलकै। नीके भेलै कुकर्मीकेँ जेहने करणी तेहने भरणी। आब छिछयाइत रहो जिनगी भरि।

प्रतिशोध

नव विवाहित सुभाषकेँ आइ सुहागराति छनि। खान-पीन समाप्त भेलाक बाद हजारो सपना तथा प्रेमपूर्ण आशा बोइकऽ प्रेयसी इन्तजार कऽ रहल घर दिस बढ़ल। एगोट पएर असोरापर आ एगोट आङ्नेमे छलै कि भितरीसँ कन्या बाजल- "कनिक हमर पएरक चप्पल नेने आउ, हम बिसरि गेलौं।" नवपत्नीक एहन संस्कारहीन बात सुनि सुभाषकेँ करेजपर ठनका खसलै मुदा दाम्पत्य जीवनक पहिल दिन आ प्रेयसीक प्रथम राति सोचि जखन ओ चप्पल लऽ कऽ गेला तँ घोघ उठबैत सीना तानि कऽ कन्या बजली- "अहाकेँ हम चप्पल लाबऽ लेल अढ़ेबाक प्रयोजन बुझलिऐ? अहाँक बाबूजी मुँहमाङ्गी रकम लऽ अहाँकेँ बेचलक अछि आ हमर बाबुजी एक-एक धूर जमीन बेचि हमरा लेल अहाकेँ किनलक अछि। ऐ हिसाबे पैसासँ खरीदल दास भेलौं अहाँ जे आवश्यकता पड़लापर खरीदार किछु करा सकैए।" ई गप्प सुनि सुभाषक गर्दन लाजसँ झुकि गेलै आ ओ निरुतर भऽ गेला। तखन कन्या फेर नम्र भऽ कहलनि- ई हम बस अहाकेँ महसूस करेबाक हेतु एकटा अभिनय कएलौं। आजुक बाद एहन किछु नै करब। एखन लेल क्षमाप्रार्थी छी।"

कन्याक आँखिमे अपन बाबूजीसँ लेल गेल पैसाक ज्वाला छल। टकापर बिकाएबला एहन दानवरुपी पति प्रति प्रतिशोधक भावना छल।

उपकारकेँ चुपकार

हम जयनगरसँ अबै छलौं। रस्तामे देखलौं, एकटा महिला अपन ६ महिनाक बच्चाकेँ गोदीमे लऽ कऽ कनै छल। लगमे जा जखन देखलिऐ तँ ओ हमरे पड़ोसी मनोजक भनसिया रहए। माने हमर गामक भौजी। घर एकेठाम हेबाक कारण हम सभ एक-दोसरकँ बड नीक जकाँ जनैत छलौं। हमरा देखि ओ आरो जोड़-जोड़सँ हिचकि-हिचकि कानऽ लगली। की भेल भौजी, छोट बच्चाक लेने एना किए भागल जाइ छी? प्रश्नक उत्तरमे ओ बजली- "हमरा ऐ दुनियाँमे कियो नै अछि। जतऽ ततऽसँ हम ठोकरे खाइ छी तैं हम मरि जाए चाहै छी। हमरा छोड़ि दिअ। जत मन हएत, ततऽ चलि जाएब। ने तँ जहर माहुर खा मरि जाएब।"

एहन पिड़ाएल बात सुनि हम नम्रसँ पुछलिऐ- भौजी एना किए बजै छी? घरमे फेर झगड़ा भेल से? तब ओ अपन दु:ख भरल कहानी बताबऽ लगली- बच्चा कानऽ लगबाक चलते खाना समएपर नै बनि सकल तइसँ हुनकर ससुर-सासु आ पतिदेव सेहो पिटलकनि आ घरसँ भगा देलकनि।

पित-खीसमे ओहिना बाजल हेता ओ सभ, चलू अहाँ। घर छोड़ि नै जाउ कतौ। कतेक समझौलाक बाद ओ आबऽ लेल राजी भेलनि। जखन हम अपना संगे मोटरसाइकिलपर लाबि ओकरा दूरापर उतारलौं तँ उनकर ससुर, सासु आ हुनकर पति हमरा उपर उल्टे लांछना

लगौलक। तोरे कारण ई मौगिया अतेक बहसल छै। तोरे सिखाएलपर एके टाङ्गपर नचै छै। आदि आदि ....

तखन हम महसूस केलौं जे दोसरकँ इज्जत बचाएब आ अपना बेइज्जत हएब। दोसरकँ भलाइ करब अपन चरित्र हत्या कराएब। उपकारकँ चुपकार एकरे कहै छै।

विचार कविजी कँ

नमस्कार कवि जी!

नमस्कार! नमस्कार!

कि समाचार सञ्जय बाबू?

ठीके छै अपन कहू?

हमरो नीके छै रामजीकँ कृपासँ

कविजी जँ नै खिसयाइ तँ एक बात पूछी?

कहऽ कहऽ की बात?

यौ काल्हि रातिमे मुग्लानी सौगात द्वारा अतेक भव्य समारोह आयोजन भेल छलै। अपने किए तमसा कऽ चलि एलौं?

धत् छोड़ू ओ बात सभ सञ्जय जी। यौ कहू तँ हम अतेक दिनसँ कविता लिखै छी आ ओ रमलखना हमरा कविताकँ बारेमे पढ़ाउत? कविताक बिम्ब आ प्रतीककँ अवगत कराओत? ओ कहै छल जे अहाँक कवितामे आरो निखार एबाक बाँकी अछि। बिम्ब आ प्रतीकमे आरो सुधार लाबू। ओतेक पैघ साहित्यिक समारोहमे हमरा बेइज्जत-बेइज्जत कऽ कऽ धऽ देलक। तैं हम सभा छोड़ि कऽ भागि एलौं।

हम तँ बौक भऽ गेलौं ओइ कविजीक एहन गप्प सुनि कऽ। कहैत छै जे कवि तँ देश आ समाजक प्रतिनिधि होइ छै। अपना रचनासँ नयाँ देशक निर्माण करै छै। मुदा एहन विचारधाराक कविसँ कि नयाँ युगक निर्माण भऽ सकैए, जकरामे अपन गुण-दोष सुनबाक क्षमता नै छै। हमरा किछु नै फुरा रहल छल।

कविता खंड

हमर मिथिलाधाम

ऐ धरतीपर पावन नगरी

नाम जकर अछि मिथिलाधाम

सीता संग विवाहित पाहुन

मर्यादा पुरुषोत्तम राम

भक्तिभाव चारू दिस पसरल

अछि प्रसिद्ध ज्ञान विज्ञान

विद्यापति संग वेद पुराणसँ

हमर मिथिला बड़ महान

ऋृषि मुनि हमर मिथिलाकेँ

अछि विदित जगतमे नामी

राजा जनक, सीता रामकेँ

एक पौराणिक नीक कहानी

एहन सुन्दर मिथिला नगरीकेँ
लङ्का किए बनौने छी
बम, आतंक, हत्या, हिंसासँ
दुनियाँमे चर्चा पौने छी

कतबो कमाएब ढौवा रुपैया
बरकति नै बिनु माइ के
जकड़ल देशकेँ छोड़ने सुख नै
कतार सउदी जाइके

बिनती हमर मिथिला बचाउ
सम्मान सभ ठाम पाबू यौ
चाहे रही घर आङ्गनमे
या विदेश कमाबू यौ

खूनक ढेला संग नवपुस्ताक पतन

सुन सुन हौ भैया सभ

आगिक चिंगारी पसाही लागि

देशभरि तबाही मचि गेलौ

जन्मदाता सभ धरतीपर अवतरण

कराबऽसँ पहिनेहि

अपन-अपन कोखिकेँ सुड्डाह

करऽ लगलौ

भविष्यक कर्णधार छै बच्चा

काल्हि धरि उपमा देनिहार सभ

दाम्पत्यक सुखमे लिप्त भऽ

अधर्मी, राक्षस आ नरपिशाच भऽ गेलौ

सृष्टिक फूल बनि सुन्दर जिनगी लऽ

अनुपम ब्रम्हाण्डक अवलोकन करब

एहन पुनीत आ परम उद्देश्य

खूनक ढेला संग बेकार भऽ गेलौ

के दोषी, ककर अछि दोष

ककरा अछि होश, के अछि बेहोश

लोभी, लालची, महत्वाकांक्षी सन

मात-पितासँ मनो घबराए लगलौ

दोसर दिस रोगी लेल भगवान कहेनिहार

समाजसेवी नामसँ प्रख्यात भेनिहार

आ स्वार्थक बिषपान केनिहार

आला-सुइ बला सभ

भौतिकवादक चपेटामे पड़ि

पथभ्रष्ट भऽ गेलौ

मच्छर आ खुनचुवा जकाँ रस चुसऽ लगलौ

पता नै ई रावणराज कहिया धरि चलत

लैङ्गिक असमानतामे गर्भ कहिया धरि उजड़त

भगवान सबुद्धि देथि ऐ दुरात्मा सभकेँ

कारण पिताक आगू माइयो लाचार भऽ गेलौ

माने खूनक ढेला संग जिनगी बेकार भऽ गेलौ

हिसाब जिनगीक

मार्च महिनाक उतरार्द्धमे आइ हम मृत्युकेँ देखलौं

सुनने छलौं/ सोचने छलौं

मृत्यु अत्यन्त सुन्दर होइ छै

सरल होइ छै

मुदा यथार्थ बिल्कुल फरक

बिल्कुल अलग पैलौं

भयानक आ बिकड़ाल रूप देखि

हम डरसँ पानि-पानि भऽ गेलौं

आब ऐठाम-

मृत्युक कटघरामे हम अपन

भूत, वर्तमान आ भविष्य

स्पष्ट देखि रहल छी

एखन धरि अनुमानित हम

५ लाखक दारू पीने हएब

२ लाख ५० हजार ७०० क माउस खेने हएब

कतौ अपने लुटेलौं / कतौ दोसरकेँ लुटलौं

एनामे बर्बाद भेल हएत हमर जमा

३ लाख ७५ हजार

आइ हम सोचै छी-

ऐ रकममेसँ किछु पढ़ाइमे लगौने रहितौं तँ

आइ हमरा पास कोनो बिषयक डिग्री रहैत

किछु पैसा स्वास्थ्यमे खर्चने रहितौं

तँ हमर शरीर कोनो बिमारीक घर नै रहैत

अथवा

ओ रुपैया बचल रहैत तँ

अपने देशक कोनो नीक शहरमे

आलीशान महल बनल रहैत

मुदा दुर्भाग्यक गप्प, एहन किछु नै भेल

फलत: हम नर्कक चक्कर काटि रहल छी

आ एखनो राति-राति भरि

सादा पन्नापर

कलमक नोखसँ

जिनगीक हिसाब करै छी

बस हिसाब करै छी।

नबरङ्गी बिलाइ

देखलौं एतऽ भिन्न-भिन्न बिलाइ

कारी बिलाइ कोनो उज्जर बिलाइ

खैरल बिलाइ आ गैरल बिलाइ

अछि सब ठाम बिलाइए बिलाइ

बिलाइ नेपालक बड़ होशियार

सिंह दरबारमे पैसैत अछि

कतारक बिलाइ ठीक विपरीत

हमरा किचेनमे पैसैत अछि

देखलौं सब किछु जुठौलक बिलाइ

मोट बिलाइ कोनो पातर बिलाइ

बच्चा बिलाइ आ बुढ़िया बिलाइ

अछि सब ठाम बिलाइए बिलाइ

मोट बिलाइ जेना नेपालक

जनताक खुन चुसने नेता

पातर बिलाइ कतारमे जे

भटकल अनाथालयक बेटा

देखलौं सब नबरङ्गी बिलाइ

वैष्णव बिलाइ-साँकट बिलाइ

घुसहा बिलाइ आ फुसहा बिलाइ

अछि सब ठाम बिलाइए बिलाइ

नवबर्षक शुभकामना

जन्मब दुर्लभ ऐ धरतीपर

माटि-पानि अछि जकर महान

सदियोसँ परिचर्चा पौने

अछि आर्यसमाज विद्यमान

पूर्वज जिनकर नाना क्षेत्रमे

कुशल, ज्ञानी, गुणवान छै

इतिहासक हर पन्नापर

एकसँ एक नीक नाम छै

एखनुक मैथिल पथभ्रष्ट भऽ

कुकर्मी-कुसंस्कारी भऽ रहल

आधुनिकताक दुर्गन्धित हवासँ

धाराशायी मिथिलाकेँ कऽ रहल

एहन विषम परिस्थितिमे

अपन कर्तव्यक बोध करब

नेपालक नोर मरुभूमिमे 73

छिड़िआएल, भुलल, भटकल जनकँ

लऽ सत्मार्गक ओर चलब

ई पुनीत कर्मयोगी सभमे

अछि हमर चरण बन्दना

सम्पूर्ण स्त्रष्टा एवम् समाजमे

ऐ नवबर्षक शुभकामना

हमर समाज बौरा गेल

एखनुक सबसँ पैघ सवाल

अछि सगरो बल्तकारे बल्तकार

गाममे बल्तकार, शहरमे बल्तकार

देशमे बल्तकार, विदेशमे बल्तकार

बुझू जे घोर कलयुग छा गेल

माने हमर समाज बौरा गेल

अत्याचार, आतंक, महिला-हिंसा

निस्तब्ध भऽ सब केउ देखैत अछि

जनता तँ आपसमे फुटले देखब

लुटेराक त्राससँ सरकारो डगमगा गेल

माने हमर समाज बौरा गेल

सुरक्षाकर्मी पथभ्रष्ट भऽ जुआ खेलै

शान्तिसेना हीनताबोधमे दारू पेलै

अशान्तिक भूमरिमे धरती खौझा गेल
माने हमर समाज बौरा गेल

कतौ फेसबुकसँ बल्तकार
ककरो स्काइपमे बल्तकार
कखनो निम्बुजसँ बल्तकार
तँ कतौ ट्वीटरमे बल्तकार
एहन अपराध सर्वत्र छा गेल
माने हमर समाज बौरा गेल

सहनशीलताक प्रतिमूर्ति नारी
मर्यादाक परिष्ठाता होइ छै
माया-प्रेमसँ जगत फुलाबै
स्वप्नदर्शनक द्रष्टा होइ छै
मुदा दुर्भाग्य दानवक उदय भेल
सकुनी मामा संग कंसक आगमन भेल

द्रौपदीक चीरहरण, सीताक रूपहरण

निन्दनीय घटना आइ फेर दोहरा गेल

माने हमर समाज बौरा गेल

की कहू, देखलौं घोर अनैतिक बात

जइठाम देखू बल्तकारे बल्तकार

बेटीक बल्तकार, दीदीक बल्तकार

मौसीक बल्तकार, पिउसीक बल्तकार

बुझू जे घोर कलयुग छा गेल

माने हमर समाज बौरा गेल

परदेशी पिया

कोना बिसरलौं मुँहो हमर

भेलौं अहाँ कोना बिरान

जन्म-जन्मक व्रतबन्धनसँ

पल भरिमे भऽ गेलौं आन

देखि सपनामे छाती फटैए

बिपनामे देखि कऽ दिल धड़कैए

लोगक पिया घर आबै छथि

हमर आखिसँ नोर खसैए

जन्मेसँ हम भेलौं अभगली

बचपन छिनल सासुर पौली

बाली उमरमे भेलौं परदेसी

बिनु पियाकेँ जीवन बितौली

केश फल्कौवामे तेल गमकौवा

लऽ जाइत छलौं पान-मखान

टोकलक बिच्चे बाट मुझौंसा

अहाँ गामक बुढ़बा हजाम

नीक नै लागै बिन अहाँकेँ

लौटब कहिया अपन गाम

असगर आङ्गन दाँत कटैए

बिन अहाँकेँ ठाम-ठाम

केश अहाकेँ बिखड़ल-बिखड़ल

चेहरा जेना लागै बबाल

लोग लगाबै ओठ लिपिस्टिक

मुदा अहाँक ओहिना अछि लाल

देखि अहाँकेँ आँखि शराबी

लागए समुन्द्रक पानि जेना
बिनु बतौने हमरा रानी
छुपेलौं एहन जवानी कोना

छुरी जइसन नाक अहाँकेँ
हीरा जइसन दाँत अछि
चाल ढालपर हम फिदा छी
कोयल सन मीठ-मीठ बात अछि

मुस्कान अहाकेँ गजब हसीना
तारीफ कतबो कम अछि
देहो जेना संगेमर्मर
और ओहूमे दऽम अछि

बाजल जखने पएरक पायल
केलक हमर दिलकेँ घायल

छन छन छन बजल झंकार

लऽ गेल हमर चैन करार

मन करैए देखैत रहितौं

सदिखन अहाँकेँ पास रही

जौं लौट आएब अहाँ लग रानी

बड़ प्रेम करब से आस करी

छठिक शुभकामना

छठि पावनि धुमधामसँ

हएत पोखरीपर जाइ के

माथ नमा कोटि नमन

करै छी हम छठि माइ के

सु-स्वास्थ दीर्घायु जीवन

पुरबथि सबकँ कामना

सम्पूर्ण श्रद्धालु भक्तजनकँ

ईएह अछि शुभकामना

पिया अहाँकेँ यादमे

मेघ सन कारी केशपर
गोरे गोरे गाल यौ
आमक रस सन लाल ओठपर
पिया अहाकेँ नाम यौ

हम दू जोड़ी संग-संग जीअब
गायब प्रेमक गुणगान यौ
मरऽसँ पहिने आ मरलाक बाद
बस रहब अहाँक गुलाम यौ

हे प्राणेश्वर लौटब कहिया
करब कखन आराम यौ
घायल दिलकेँ मलहम अहाँ
दिल अछि अहाँक मकाम यौ

रातिरा-राति भरि निन्द नै आबै
बड़ जोर झकझोरै याद यौ
बिन अहाँके जिनगी बीतल
अहाँ दिल्ली, अरब, असाम यौ

नोर बहैए नयनसँ हमर
राह देखैत सौ बेर यौ
अपने भेलौं परदेशी बाबू
हम छी एतऽ बेकार यौ

बिनु पानिकेँ मछली बुझू
फुटल अल्मुनियम थारी यौ
बिनु रोहितकेँ जिन्दा लाश
भेल ई अहाँक रुपाली यौ

प्रेमक फल

सीसा फुटल दिल टुटल

सकनाचुर भऽ छिरया गेल

डोलीमे ओ गेली पिया घर

हाथमे दारू थमा गेल

दारुए हमर साथी-संगी

बिनु ओकर सहारा नै

कखनो ठर्रा कखनो प्याक

बिनु ओकर गुजारा नै

जिनगी अपन नरक बनेलौं

ओइ लजबिज्जीक प्यारमे

मरणासनमे साँस अछि लटकल

ओ मजा करै ससुरालमे

प्यार करब पैघ बात नै

निमाहब बड़का बात छै

प्रेमसँ ककरो जीवन सम्हरल

ककरो जीवनमे घात छै

वेलेन्टाइन शुभकामना

बिन्दिया सब दिन चमकैत अहाँकेँ

हाथक मेहदी लाल रहए

वेलेन्टाइनक शुभ अवसरपर

जोड़ी अहाँक बबाल रहए

चूड़ी अहाँकेँ खन-खन खनके

प्रेमीसँ बहुते प्यार मिलए

दु:ख अहाँकेँ देखि कऽ भागए

खुशी केर संसार मिलए

फूल सन ई खिलल चेहरापर

कली सन मुस्कान अछि

नै देखि अहाँकेँ प्रेम दिवसपर

दिल बहुत परेशान अछि

दिलसँ दिलकँ बात कही

बिनु कहने नै रहि सकी

हेप्पी वेलेन्टाइन डे तथा

मनसँ प्रेमक गुनगान करी

सम्मान जन्मभूमिक

आएल नयाँ साल देखू

लऽ कऽ एक नयाँ उत्साह

सब छथि मग्न एक दोसरमे

करए हृदएसँ प्रेम प्रवाह

आइ कतेक महत्वक दिन

एक दोसरकेँ सब जुराबै

रहए सबदिन एहने दिन

शान्ति आ समृद्धि पाबै

मानव बीच सद्भाव देखल

बोधिवृक्ष सभ जेना हरा-भरा

मनोरम दृश्य आ अद्भुत पारीकार

लागए जेना प्यारा-प्यारा

ईर्ष्या दोष त्यागब उत्सवमे

पुन: मिलि जुलि परिवार चलाएब

आमक चटनी आ दही भात

चैतक रिन्हल बैशाखमे खाएब

छुटल ई सौभाग्य हमर

जखने बढ़लौं विदेशक ओर

राति-राति भरि निन्द नै आबए

भोरे आखिसँ टपकए नोर

अपनेक दुआ आ धैर्यताक आड़मे

काममे हम प्रस्थान करै छी

अन्तःकरणसँ हर अवसरपर

जन्म आ कर्मभूमिक सम्मान करै छी

जूड़शीतल

दु:ख अहाँकेँ देखि कऽ भागए

खुशी केर संसार मिलए

टोला टापर घर डगहरमे

अहींक जय जयकार मिलए

खूब जुराबै मात-पिता सभ

भाइ बहिनसँ प्यार मिलए

जूड़शीतलकेँ शुभ अवसरपर

पाहुनकेँ सत्कार मिलए

झूठ फुसिसँ जान छोड़ाबथि

सचकेँ करबथि सामना

सदखनि जीवन गमगम गमकथि

ईएह नव बर्षक शुभकामना

प्रवासक वेदना

हमर जिनगीक कोनो हिसाब नै रहल

पढ़बाक लेल कोनो किताब नै रहल

बैसल छी एखनो असगरे एकान्तमे

किन्तु पीबाक लेल कोनो शराब नै रहल

सपनामे ओहे चेहरा अबैए

अबैत अछि ओहे ठाम आ गाम

कतबो बिसरऽ चाही दिलसँ

नै बिसरि पाबी जनकपुर धाम

छी मैथिल हम मिथिलाक बासी

दूर छी तैयो अपन प्रदेशसँ

विवशताक मारल, पड़तारल

पत्र लिखै छी अलग देशसँ

माए बाबुकेँ चरण-बन्दना

दोस्तकेँ हमर सलाम रहल

अन्जान-सुन्जानपर ध्यान नै देबै

माफ करब सब कहल सुनल

मन लगाबी कतबो एतऽ

जिउ टाङ्गल अछि दूरापर

दिन कटै छी राति अइ भारी

सदखनि जान अस्तुरापर

प्रेमक मलहम फोन बनल अछि

जीबाक माध्यम दू बात अछि

थाकल ठेहिआएल आबी जौं कखनो

लागै नै केओ साथ अछि

कते कहू प्रवासक वेदना

लिखैत सेहो शरम लगैए

नोर आखिसँ टपटप चुबए

कलम पकड़ैत हाथ कँपैए

बस ई विनती नीकसँ रहब

नीकसँ राखब गाउँ समाज

एक दिन हमहूँ लौट कऽ आएब

जगमग करतै मिथिला राज

सुनि लिअ दू बात हमर

भला करब तँ भला मिलत

बुरा करब तँ बुरा मिलत

ई छै जगत जननीक धरती

कर्मक फल अवश्य मिलत

हे मानव नीक कर्म करू

करै छी किए खिसयालि सन

चोरीक धन नै रहत सब दिन

करै छी किए धधियालि सन

ऐठाम सब किछु नाशवान छै

जाहि पड़त ई जग छोड़ि कऽ

बिनु भक्तिकेँ सुख नै भेटत

रहब कते मुँह मोड़ि कऽ

नेपालक नोर मरुभूमिमे 95

सुनै छी जानकी मन्दिरमे

गिट्टी बालु गिरबै छी

अपन स्वार्थ पूरा हेतु

जनताकेँ घिसयबै छी

एखनो ज्ञानक ताला खोलू

आबि जाउ नीक पथपर

दुर्दशासँ बचौथिन मैया

आशन हएत स्वर्ग रथपर

हम सब मैथिल एक रही

एकजुट भऽ साथ चली

पहिचान बनाबी अपन मिथिलाकेँ

इतिहासक पन्नापर चमकैत रही

सब कहै छथि मरू-भूमि

हम कहै छी उर्बर छै

रेगिस्तानमे एहन भूमि

दर्शन भेनाइ दुर्लभ छै

हम छी एखन कतारमे

चारू दिस समुन्द्रसँ बेरल

किछु अंश छै बालु पत्थर

कतौ अछि महलसँ घेरल

ऐ देशमे एकटा ठाम

जमेलिया जकर नाम छै

वसोवास हमरो अछि ओइठाम

अपनेमे ओ महान छै

नाना प्रकारसँ परिश्रमी सभ

ईमान्दारी अपन बचौने छै

दूर देशमे रहितो नित्य

अपन स्वाभिमान बचौने छै

ई अछि मित्र नेपाली हमर

पत्थरमे कएने छथि हरा-भरा

नै घटै कहियो रोटी इनका

परिवार संग रहथि कुशल सदा

पुन: चमकतै मिथिला राज

जय मैथिल जय मिथिलावासी
करू सब मिलि कऽ जयकार
बन्द हेतै कुशासन सबकँ
पुन: चमकतै मिथिला राज

सब ढेलफोड़बा नेता तेहने
लै टिकट, कुर्सी, भत्ता
पार्टी अते जे नाम याद नै
जन्मल जेना गोबर-छत्ता
के रावण के अछि कुम्भकरण
ककरा बुझी न्यायक भगवान
झोरा भरब रणनीति सबकँ
बस रामलीलामे बनैए राम

हाथीसन दुमूँहा दाँत छै

एक देखाबै दोसरसँ खाए
पीठ पछाड़ी छुरा मारत
मुँहपर बाजत भाए यौ भाए

आइ पद छै घुमि लेब
बड़का बड़का गाड़ीमे
छिनब जखने छुछुन्नर बनतै
छिछएतै बारी-झारीमे

माङ्गल भीख नै भेटतै ककरो
सभ जनता जँ मिलबै आब
बन्द हेतै कुशासन सबकेँ
पुन: चमकतै मिथिला राज

आबो किए नै मिलि बाँटि कऽ
ऐ दानव सभकेँ श्राद्ध करी

हक छिनब जँ पाप थिक तँ
किए ने एक अपराध करी

गरीबो दुखिया चैनसँ जीअत
हेतै गाउँ समाज उद्धार
बन्द हेतै कुशासन सबकँ
पुन: चमकतै मिथिला राज

भैंसी हेरा गेल

आइ भोरे हम गेल छलौं

चोरनिया चौरी भैंसीमे

साथमे मोहना, सोहना आ

बुधनो छल भैंसीमे

बुधना-मोहना जामुन तोड़लक

सोहना संग आधा बटलक

हम कहलियै हमरो दे

ओ कहलक अपने तोड़ि ले

मन हमर बेपिड़ित भेल

तरबाक तामस मगजपर गेल

सोचलौं अनेरे हम नै जरी

कविता लिखि मन ठण्डा करी

जा कऽ बैसलौं आरि कात

लागल एक कविता हाथ

तखने आएल भैंसी के याद

दौड़ैत गेलौं डगहर कात

नै देखिते हमर मन डेरा गेल

की कहू हमर भैंसी हेरा गेल

नङ्गौटिया साथी

हम जन्मली कुसी अम्बसिया

ओ जन्मल इजोरियामे

संगे खेलली बालू-बालू

मीत लागल दुपहरियामे

संगे पढ़लौं संगे लिखलौं

घुमलौं बड़ बड़ खेत पथार

कखनो तोड़लौं आम आ जामुन

कखनो चोरौलौं अपने अचार

बचपन बितल यौवना आएल

गामक संगी दूर पड़ाएल

बाबू हुनकर पैघ जिमदार

काका सेहो छल ठिकेदार

हमर बाबू छोट किसान

गुजर करी साँझ बिहान

हमर पढ़ब सपना भेल

ओ पढ़ि लिखि कऽ मास्टर भेल

मन कऽ भाव उठैए जखने

लिखै छी छोट कविता सन

नै भेटत कहियो जीवनमे

ओहन नङ्गौटिया मिता सन

सत्यता

हम मानव छी

एक दिन जन्मलौं संसारमे

माय/ बापक इच्छा संगे एलौं संसारमे

नाना तरहक क्रियाकलाप कएलौं

कोनो नीक काम

कोनो खराब काम

कखनो सामाजिक काम तँ

कतौ अपराधीक काम

मुदा की अपने सभकेँ बुझल अछि?

हमहूँ एक दिन जरूर मरबै

गोरहा-काठीसँ धुह-धुह जरबै

इहलीला हमर समाप्त भऽ जेतै

शरीरक संगे कुकर्म सभ जेतै

कारण हमरा पता अछि-

किए कि,

पृथ्वी नाशवान छै

नाशवान रहतै

सब दिन नै कियो अमर रहलैए

आ नै कियो रहतै

प्रकृतिक यथार्थ/ दुनियाँक सत्यता

ईएह छै आ ईएह रहतै

मृत्यु पश्चात

हमर मृत्यु पश्चात हवा ओहने बहतै

जेहन छलैए पहिने

दुनियाँ ओहने रहतै

जेहन रहै पहिने

सूर्य, चन्द्रमा

पृथ्वी, आकाश

सब अपना अपना ठाम

अपन गतिसँ चलतै

केवल फरक हेतै ओ क्षण

जतऽ हेतै हमर शव

कियो कन्नारोहट करतै

कियो आँचरसँ मुँह पोछतै

सर पटकतै हमर बेटा

दू ठोप कनतै हमर बेटी

हेतै निःसहाय हमर कनियाँ

लगतै कहिया हुनका भेटी

मुदा,

ई सभ एकटा मायाक जाल

एकटा मनक भ्रम

केवल कनिक समय लेल

केवल कनिक दिन लेल वा

केवल कनिक महिना लेल मात्र रहतै

ओ समय-

चलतै जोर-शोरसँ चर्चा हमर

मुँह-मुँहसँ बाट आ डगहर

कियो कहतै हम नीक छलौं

कियो कहतै खराब

कियो देतै उपमा अमृतकँ

कियो कहतै डकहर शराब

ऐ लोकापवाद संग,

समयकँ चक्र चलिते रहतै

जिनगी ओ सभ कटिते रहतै

एतै पुन: कोनो नयाँ आयाम

बिसरि जेतै सभ हमर नाम

सबकेँ मनसँ हेरा जाएब हम

सदा-सदा लेल बिसरा जाएब हम

दैवक खेल

सपना हमर सपने रहि गेल

मांगक सेनुर बहिए गेल

आस लागल छल जाहि पियापर

हमरा छोड़ि कऽ चलिए गेल

नैन तकैय मन कनैय

हाथक चूड़ी बाट जोहैय

पएरक पायल झनकि झनकि कऽ

पिया वियोगक गान गबैय

अपन किस्मत समयक खेल

जिनगी जिअब नसीब नै भेल

भरल जवानी रससँ डुबल

दैवो केहन निठुर भऽ गेल

घड़ी देखि-देखि दिन कटै छी

गनि तरेगन होइय भोर

होस ने कखनो सुधि ने कखनो

अछि रातिए कि भेल इजोर

हम अभागल बिधवा बनली

करेजक टुकड़ा लैए गेल

आस लागल छल जाहि पियापर

दुनिया छोड़ि कऽ चलिए गेल

रक्षाबन्धन

भाइ-बहिनक प्रेम भरल छै

लिअ ने एकरा अर्थ अनेक

एक दिन ला सालमे आबए

तैं तँ छै ई पर्व विशेष

थाल सजल छै लड्डू रखल छै

लाल चन्दनसँ माथ रङ्गल छै

हर्ष-खुशीकेँ बाढ़ि आबि गेल

हाथमे स्नेहक डोर बन्हल छै

चारू दिस गुंजए गीत

भाए-बहिनक रीत आ प्रीत

माँ अम्बेसँ करैत प्रार्थना

होए भैयाकेँ जीते जीत

नेपालक नोर मरुभूमिमे 113

नीक पथ रोज यौ भैया

बढ़तै हमरो आत्मविश्वास

रक्षा करब देश, समाजक

रखने छी बस ईहे आस

अहाँ हमर आँखिक तारा

छी हम बहिन अहाँक दुलार

शत्रुकेँ चङ्गुलसँ करब

सदखनि अपन भूमि उद्धार

बाट जोहब हम ऐ दिनकेँ

रहत जाधरि ठोठमे प्राण

रक्षाबन्धन जगमग करतै

भैया जिअत सालो साल

छठि

मध्य राति सपनामे हम नेपाल गेल छलौं
छठिमे परिवार संगे बड़ खुशी भेल छलौं
ठकुवा भुसबा आरो सब कुछ लऽ गेल छलौं
फटक्काकँ झोरा मुदा घरही बिसरि गेल छलौं

माय, बाबू बहिन भाइ कनियाँ छलीह साथमे
छोट-छोट बातपर तैयो रुसि गेल छलौं
प्रसाद खाइत काल निन्द खुलल जखने
अपने ओछानपर कतारमे सुतल छलौं

विपनामे होइत सच्चे मजाक करैत साथी
धत् हम तँ बेकारमे सपनामे गेल छलौं

दिवाली

भेटब दोसर दिवालीमे

हम ऐ साल नै आबि सकलौं

मुदा आएब दोसर दिवालीमे

पूजा करब संगे लक्ष्मीकेँ

प्रसाद चढ़ाएब थालीमे

रावण मारि कऽ राम एलाह

तखने भेल दिवालीक शुरूआत

दीप जराएब आरती करब

खुशी बाँटब अछि पैघ बात

अपने झुमू सब केउ झुमताह

खुशी मनाउ परिवारमे

बिसरि सब किछु मन लगाबू

फटक्का छोड़ू दरबारमे

असत्यपर सत्यकँ पताका
तैं अछि ई पाबनि महान
आगामी दिनमे टुटे अहिना
दुष्ट दलकँ ई अभिमान

सत्संगत सु-मार्ग देखाबू
माँ सँ बस ईएह प्रार्थना करू
गरीबी भागै समृद्धि आबै
बस ईहे अर्चना करू

अन्तमे हम की कहू अहाँकँ
ध्यान राखब ऐ पालीमे
हम ऐ साल नै आबि सकलौं
मुदा आएब दोसर दिवालीमे

प्रेमक अकार

की अछि प्रेम की एकर अकार

दिअ सब केउ अपन विचार

करैय सब केउ प्रेमक पूजा

पता नै ककरो के अछि दूजा

प्रेम बिना अन्हार अछि जिनगी

लगबै नारा बुढ़बा-नन्हकी

बच्चो जुअनका ऐमे मातल

सबकेँ आँखिपर पट्टी साटल

कियो कहैय देहसँ प्रेम

कियो कहैय सुरतिसँ

कियो करैय जन्म-धरतीसँ

कियो करैय मूरतिसँ

सब केउ अपन जमबैत अछि

भिन्न-भिन्न रूप बनबैत अछि

हम कहै छी मनमे अछि प्रेम

हम कहै छी आत्मा अछि प्रेम

गाउमे छलौं गाउँ टा छल प्रेम

शहरमे एलौं शहर टा भेल प्रेम

देशमे छलौं सीमित छल प्रेम

विदेशमे एलौं देशटा भेल प्रेम

जौं जौं जाइ छी दूर देशसँ

प्रेमक आयतन बढ़े बिशेषसँ

रखने छी एखनो छातीमे

सचने छी मनक पाथीमे

हमरा नजरिमे उत्तम अछि प्रेम

आ परम विशाल अछि एकर अकार

कि कहब अछि अपने सभकेँ

दिअ सबकेउ अपन विचार

जनकपुरक रेल

जनकपुरक रेलवे स्टेसन
बनल अछि एक बज्र बिशेषण
जीर्ण अवस्थाक मरम्मत जरुरी
सेहो टालल दोसर सेशन।।
नेपालक एक मात्र रेल यातायात
सेहो बनल विश्वासघात
जनकपुरसँ निकलल गाड़ी
पटरी छोड़लक बिचे बाट।।
बौआ पुछलनि माय कहू
ई ट्रेन कहिया धरि चलत?

माए बजलनि सुनु बौआ

कुर्सीक खेल जहिया धरि चलत।।

घिच्चाघिच्च-मिच्चामिच्च छोड़िते

स्वर्ग भऽ जाएत अपन देश

समान विकास सभठाम हएत

नै रहत कोनो उलझन विशेष।।

रेलवे आकि रेलक चार्ट

बड पैघ समस्या छै

निवेदन हमर सम्बन्धितसँ

जल्दी ऐपर ध्यान देबै।।

अस्पतालक हाल

जनकपुरक अञ्चल अस्पताल

बनल अछि एक पैघ सवाल

समयमे जँ नै ध्यान देबै तँ

रुप ईहो लऽ लेत बिकराल ।।

फोहरमैला व्यवस्थापन देखल

ऐ संस्थाक दोसर खराबी

नै भविष्यक परवाह अछि ककरो

करए सभ अपन मनमानी।।

स्वार्थक विष पीने सभ सेवक

नै लागय मन उपकारमे

रोगी ऐ ठाम खूनसँ लतपत

मुदा ओ व्यस्त क्लिनिक संसारमे।।

देशक सर्वोच्च जनशक्ति छी तँ

ऐ बातपर ध्यान धरी

रोगीक लेल भगवान बनब तँ

अपन कर्तव्यक बोध करी।।

आबो,

दु:ख, पीड़ा जनताक बुझब

ईहे मनमे आस अछि

समय-समयमे अस्पतालो टेबब

अटुट जनविश्वास अछि।।

अपन अलग पहिचान बनेबै

अहूँ आबू हमहूँ एबै

अपन अलग पहिचान बनेबै

बड पीने छल खून मुझौसा

तेलचट्टाकेँ तेल चटेबै।।

हेतै वापस भेँट जखने

चमरा खेतमे मुँह डुबेबै

भक-भक सुझतै दुनियाँ तखने

ढौसा बेङ्गक ढौह फुलेबै।।

कुर्सी छिनबै सत्ता छिनबै

दिन-रातिक भात्ता छिनबै

फटर-फटर जे करतै जखने

देहक कपड़ा-लत्ता छिनबै ।।

नै छोड़बै नै क्षमा करबै

हकले चाहे जिबै मरबै

मरि जेबै तँ लेखा लेबै

जिबै तँ गङ्गा स्नान नहेबै।।

यौ भैया यौ बाबू आबू

बन्दूक देखि नै पाछू भागू

चाही जँ मिथिला राज अहाँकेँ

जोड़सँ अपन डेग बढ़ाबू।।

बदलू सरगम बदलू साज

डटि कऽ करु अपन काज

चुमत सफलता कदम अहाँकेँ

गम गम करत मिथिला राज।।

चान्द सुरज अछि साथ अहाँकेँ

धरतीसँ आकास धरि

विश्वासक एकटा किरण पकड़ने

बैसल अन्तिम साँस धरि।।

चलू सभ केउ युद्धमे जेबै

अपन अलग पहिचान बनेबै

नेपालक नोर मरुभूमिमे 125

चारुदिस फहरेबै झण्डा

छुट्टे मिथिला राज बनेबै ।।

गीत

राति छलै काल्हि धरि

भोर भऽ गेलै

कारी पोतल इतिहास

इजोर भैए गेलै।

बड सतौने छलै

तङ्ग केने छलै

ओहो तनाशाह मरल

सोर भैए गेलै

चलु उठी कनी

आबो जागी कनी

सबठाँ मिथिलाक

झण्डा फहराबी कनी

हम तैयारे छी

अहूँ तैयारे रहू

ओइ छुछुनरकेँ

अहाँ खबरदार कहू

आब भेटतै सभ हक

पहिने खाली छलै

ढेलफोरबाकेँ एतऽ

मनमानी छलै

सब एक जुट भेली

जोर भैए गेलै

राति छलै...........

भोर भैए...

मनक भाव

की चूकि भेल हमरासँ जकर

देलौं एहन सजाए अहाँ

छी सब केउ अपने साथ-साथ

पर केलौं किए हमरा जुदा ।।

सपना देखब अपराध छिऐ तँ

एहन प्यास जागल कोना

बिनु परिवार जिनगी टेबब

जीवन एहन काटब कोना ।।

झुठ-फुसिक इल्जाम लागए

ई नारी जीवन केहन

परिवार प्रति अटुट श्रद्धा होइतो

बिताबी हर छन नरक लागे जेहन।।

सुनि, सोचि कनी ध्यान धरी

नै जुदा करु परिवारसँ

छी सदस्य हमहूँ ऐ परिवारक

नै वंचित करु परिवारसँ।।

साम्प्रदायिक दङ्गा

समाजमे गेलौं फूट देखलौं

परिवारमे देखलौं आपसी द्वन्द्व

टोला-टापर स्तब्ध मौनता

नेता सभ करे नारा बुलन्द।

लिखबाक छल हमरा सामाजिक कथा

जनता-जनार्दनक पीर आ व्यथा

खोजैत छलौं कोनो यथार्थ घटना

भेटल ओतऽ लुटपाट घटना।

छोट-छोट बातक बिषय बनौने

राजनीतिकेँ अपन अजेण्डा बनौने

धर्मनिरपेक्ष देशक जनता सभ

साम्प्रदायिक दङ्गाक आह्वान कएने।

काल्हि धरि छलै सलीम चचा

आइ भऽ गेलै तलवारक निशाना

ईद दिवाली एक बुझाइ जेना

लुटै छै आइ सभ ओकरे खजाना।

हमर कलम ओतै ठरा गेल

मन-मस्तिष्क दुनु घबरा गेल

देखी नतीजा नङ्गटे नाचके

बुझु हमर मसि सुखा गेल ।

नै बनल कोनो नीक कविता

नहिये बनल रसगर उपन्यास

मानवता, सामाजिकतापर आँच आएल छै

लगै सब ओतऽ हास-परिहास ।

हमर निवेदन पहिरु अङ्गा

कतेऽ नचै छी नङ्गे -नङ्गा ?

भविष्य अहाँक चौपट भऽ जाएत

तैँ बन्द करु साम्प्रदायिक दङ्गा ।

चेतना

स्वार्थ-स्वार्थसँ भरल संसार

छिनए सबकेँ सब अधिकार

अपन अभिमान बचएबाक हेतु

करए लाखो अत्याचार।।

की कहू दुनियाँक रीत

किछु नै समझमे आबैए

अपन झूठ शान-सौगात ला

मिथ्या दोष लगाबैए।।

मानव भऽ मानवता भुलब

ई केहन अनैतिक बात कहू

नैतिक पतन, अस्तित्वमे दाग लऽ

आब कथीक पश्चताप कहू।।

अपील सुनू, धधकत इनसान

अपनहि जैसन सबके मान

नेपालक नोर मरुभूमिमे

स्वार्थ बिना जँ जिनगी टेबब

निश्चित बनत देश महान ।।

एक एहनो नारी

चाही उनका स्टेण्डर खाना
तीत नै कि मीठ-मीठ दाना
खर्च करऽ मे कनियो कम नै
बस देखब सर्कस सिनेमा॥

भोरे उठि अबै छी जखने
आर्थिक स्त्रोतक अधारपर
पिछुवारेसँ चुपे निकलल
शोपिंग करऽ बजारपर॥

नयाँ डिजाइनक साड़ी चाही
अभिनेत्री सन गहना यौ
बात हिनकर छनि छुछे करु
कि करियै हम बहिना यै॥

नव युक्तिसँ नव प्रेमी संग
प्रेमक नाटक थिक हिनकर काम
फ़सलनि जे हिनका फेरामे
भऽ गेलाह ऐठाम बदनाम॥

पहिनेक नारी एहि मिथिलाके
सहनशील आ कतेक सुशील छलीह
आजुक नारी भौतिकवादमे
मैथिलानीक गुण बिसरि गेलीह॥

कि हएत हमरा मिथिलाकेँ
नारी जौँ पथ छोड़ि देताह
जीवनके दु रथ होइ छै
बिनु नारी जीवन कोना चलताह॥


विन्देश्वर ठाकुर, पिता:-श्री सूर्यनारायण ठाकुर, माता:-श्रीमती तुलफी देवी, पत्नी:-श्रीमती किरण देवी। गाम:-गा. वि. स. गिद्धा ७ योगियारा, धनुषा नेपाल। हाल:-कतार; शिक्षा:- स्नातक [INTER]; जन्म:-18/4/1991; हाल:-नबोदित साहित्यिक मोबाइल पुस्तकालय कतारक कार्यकारीणी सद्स्य एवम् अन्तरराष्ट्रिय नेपाली साहित्य समाज कतार च्यापटरक साधारण सदस्य।